Dr. Guddy Kumari

(Guest lecturer)

History Dept.

A.N.D. College,Patory(Samastipur)

B.A.(H) Part-I, History/Paper-I

LECTURE - 8.

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें □□□

https://youtu.be/-xMXOGxaQpY

"राजपूतो की उत्पत्ति"

>> प्राचीन भारतीय इतिहास में हर्ष की मृत्यु के पश्चात से 1200 ई. तक के काल को राजपूत युग के नाम से जाना जाता है। डॉ. स्मिथ के अनुसार सातवीं सदी के मध्य से बारहवीं सदी के अंत तक के काल को राजपूत युग कहा जाता हैं।

राजपूत कौन थे? यह एक अत्यंत विवादास्पद समस्या है। राजपूत शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सातवीं शताब्दी में ही मिलता है। "राजपूत" संस्कृत भाषा के "राजपुत्र" शब्द का अपभ्रंश प्रतीत होता है। राजपूत शब्द का प्रयोग सातवीं शताब्दी से पूर्व न होने के कारण विद्वानों में इस विषय में अत्यधिक मतभेद है। कुछ इतिहासकार राजपूत शब्द का प्रयोग क्षत्रिय सामंतों की अवैध संतानों के लिए प्रयुक्त मानते हैं, तथा कुछ राजपूतों को शक, कुषाण आदि विदेशी आक्रांताओं की संतान घोषित करते हैं। राजपूतों के उत्पत्ति के संबंध में निम्नलिखित चार विचारधाराएं हैं :–

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

१. राजपूत विदेशी थे

२.राजपूतों का प्रादुर्भाव वीर जातियों से हैं।

३.राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुंड से हैं।

४.भारतीय उत्पत्ति।

१. राजपूत विदेशी थे –

राजपूतों को विदेशी मानने वाले इतिहासकारों में कर्नल टॉड, स्मिथ, क्रुक एवं भंडारकर के नाम उल्लेखनीय है।

कार्नल टांड राजपूतों एवं शक सीथियनों के गुणों की समानता के आधार पर राजपूतों को विदेशी मानते हैं। स्मिथ भी राजपूतों को उनमें प्रचलित अशव, शक्ति एवं अस्त्र–शस्त्रों की पूजा एवं धाय रखने की प्रथा के आधार पर विदेशी मानते हैं।

टांड एवं स्मिथ के मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि उनके द्वारा प्रस्तुत कर तर्कों का सरलता पूर्वक खंडन किया जा सकता है।

प्रसिद्ध इतिहासकार ओझा के अनुसार अश्व, शक्ति एवं अस्त्र–शस्त्रों की पूजा भारत में विदेशियों के आगमन से पहले से ही प्रचलित थी तथा भारतीय साहित्य से प्रमाणित होता है कि राजपूतो में प्रचलित धाय रखने की प्रथा उन्होंने विदेशियों से ग्रहण नहीं की थी।

कैम्बेल तथा jackson का मत है कि राजपूत गुर्जर थे। गुर्जरों ने हूणों के साथ भारत में प्रवेश किया तथा भारतीयों के साथ संबंध स्थापित किए। अत: उन्हें राजपूत कहा जाने लगा। डॉ भंडारकर तथा क्रुक ने भी इस मत का समर्थन किया है। लेकीन इस तथ्य को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि इस इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि हूणों के साथ गुर्जरों ने भी भारतीय अभियान किया था। डॉ. भंडारकर ने

Dr. GUDDI KUMARI (A.N.D COLLEGE)

राजपूतों की विभिन्न शाखाओं को अलग–अलग विदेशी प्रमाणित करने की भी चेष्टा की है।

इस प्रकार समस्त इतिहासकार जो राजपूतों को विदेशी मानते हैं ऐसे तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत करने में असफल रहे हैं जो अकाट्य हों। अत: राजपूतों की उत्पत्ति से संबंधित इस सिद्धांतों को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

२.राजपूतों का प्रादुर्भाव वीर जातियों से –

अनेक इतिहासकारों का विचार है कि राजपूत न तो पूर्ण रूपेण भारतीय थे और ना ही उनकी पूर्णतः विदेशी उत्पत्ति थी। ऐसे इतिहासकारों में डॉ ईश्वरी प्रसाद प्रमुख है। इन इतिहासकारों का विचार है कि " विदेशों से आने वाली वीर लड़ाकू जातियां धीरे–धीरे भारतीय समाज एवं यहां के रीति–रिवाज में घुल मिल गए, जिनसे एक नवीन वर्ग का उदय हुआ जिसे राजपूत कहा गया लेकिन निश्चित प्रमाणों के अभाव में इस मत को भी स्वीकार नहीं किया जा सकता।

३.राजपूतों की उत्पत्ति अग्नि कुंड से –

इस मत को स्वीकार करने वाले विद्वान चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो को आधार मानते हैं। पृथ्वीराज रासो के अनुसार जिस समय आबू पर्वत पर वशिष्ट, गौतम, अगस्तय आदि ऋषि यज्ञ कर रहे थे तब दैत्यों ने विघ्न डालने के उद्देश्य से मांस रक्त हड्डी आदि डालकर धार्मिक अनुष्ठान को अपवित्र कर दिया। इस उत्पात को रोकने के लिए मुनि वशिष्ट ने एक अग्नि कुंड तैयार किया। इस प्रकार इस अग्नि कुंड से प्रतिहार, चालुक्य, परमार एवं चाहमान की उत्पत्ति हुई जिनसे चलने वाले राजवंशों को राजपूत कहा गया। चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो में वर्णित उक्त वर्णन के आधार

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D. COLLEGE)

पर इस मत को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि इस मत के विरोध में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं –

* पृथ्वीराज रासो की प्राचीनतम प्रतिलिपि मे इस कथा का वर्णन नहीं है या कथा संभवता चौदहवीं शताब्दी के बाद इस ग्रंथ में जोड़ा गया है।

* आधुनिक वैज्ञानिक युग में अग्निकुंड से वीरों की उत्पत्ति को मानना संभव नहीं है।

* इन चार राजपूत वंशों को अग्निवंशीय नहीं स्वीकार किया जा सकता क्योंकि पृथ्वीराज रासो में ही राजपूतों को सूर्यवंशी चंद्रवंशी एवं यदुवंशी कहा गया है।

* किसी अन्य साक्ष्य में इस कथा का वर्णन उपलब्ध नहीं है।

४. भारतीय उत्पत्ति –

अधिकांश विद्वान राजपूतो की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय क्षत्रियों से ही मानते हैं। राजपूतों को भारतीय मानने वाले विद्वानों में cv वैध, गौरीशंकर ओझा, दशरथ शर्मा, के.एम.मुंसी तथा वी.एन. पाठक प्रमुख हैं।

राजपूतों को भारतीय मानने वाले विद्वानों में भी दो मत प्रचलित है। प्रथम राजपूत ब्राहमणो के संतान थे तथा द्वितीय राजपूत क्षत्रिय थे। प्रथम मत का समर्थन डां. दशरथ शर्मा करते हैं।

अन्य विद्वान राजपूतों को क्षत्रिय ही मानते हैं। राजपूतों को प्राचीन भारतीय छत्रियों से संबंधित मानने वाले विद्वान अपने मत के समर्थन में निम्न तर्क देते हैं :–

* प्रतिहार अपने अभिलेखों में स्वयं को सूर्यवंशी क्षत्रिय मानते हैं।

* साहित्यिक स्रोतों (हमीर महाकाव्य) से भी चाहमानों का सूर्यवंशी होना ज्ञात होता है।

* राजपूतों में मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति भी देने की भावना से उनका भारतीय होना प्रमाणित होता है।

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)

निष्कर्ष –

यदपि अनेक इतिहासकार राजपूतों की उत्पत्ति वैदिक कालीन क्षत्रियों से स्वीकार नहीं करते, किंतु राजपूतों को भारतीय मानना ही सर्वाधिक तर्कसंगत है। राजपूतों का भारतीय राजनीतिक पटल पर उदय विदेशी आक्रमणों के विरोध करने की प्रक्रिया के दौरान हुआ था तथा उन्होंने स्वेच्छापूर्वक राष्ट्र एवं उनके लोगों तथा संस्कृति की रक्षा के लिए क्षत्रियों के कर्तव्य का भार अपने कंधो पर ले लिया। अत: राजपूत विशुद्ध भारतीय हीं थे।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)